ब्राक मीडिया

डॉ. भीमराव अंबेडकर महाविद्यालय के मीडिया छात्रों का प्रायोगिक समाचार-पत्र

ब्राक मीडिया के निरंतर एक वर्ष प्रकाशित होने की बधाई। पिछले साल 27 अक्टूबर 2023 को कई साल बाद पहला संस्करण प्रकाशित हुआ। शिक्षकों के मार्गदर्शन का, सभी सहयोगी विद्यार्थियों का और विशेष रूप से पाठकों का हृदय से आभार।

नई दिल्ली, सोमवार , 21 अक्टूबर 2024 | अंक 6 ,पृष्ठ 1

अंबेडकर कॉलेज की तीन दशकों की स्वर्णिम यात्रा

प्राचार्य और शिक्षक गण का ग्रुप फोटो

नई दिल्ली : डॉ. भीम राव अंबेडकर कॉलेज (BRAC) 8 फरवरी 1991 को भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. भीम राव अंबेडकर के जन्म शताब्दी वर्ष के दौरान डॉ. पीसी पतंजलि के संस्थापक प्रिंसिपल के रूप में अस्तित्व में आया। यह दिल्ली विश्वविद्यालय का एक घटक सह-शिक्षा कॉलेज है और दिल्ली सरकार द्वारा 100% वित्त पोषित है। अपनी स्थापना के बाद से, इसने शिक्षा और पाठ्येतर दोनों क्षेत्रों में प्रगति के पथ पर अपनी निरंतर गति बनाए रखी है। प्रिंसिपल, शिक्षण और गैर-शिक्षण स्टाफ ने युवाओं को एक फलदायी और जिम्मेदार भविष्य बनाने के लिए प्रेरित करते हुए समग्र और समावेशी सीखने का माहौल बनाने के लिए खुद को समर्पित किया है। कॉलेज ने 2016 में अपनी रजत जयंती (संचालन का 25वां वर्ष) पूरा किया और इस वर्ष कई शैक्षणिक कार्यक्रमों, कार्यशालाओं और सम्मेलनों के साथ मनाया गया। प्रमुख शैक्षणिक कार्यक्रमों में बी.कॉम और बी.कॉम (ऑनर्स), बीए (ऑनर्स) भूगोल, बीए (ऑनर्स) इतिहास और सदाबहार बीए (प्रोग्राम) शामिल हैं। कॉलेज को विश्वविद्यालय के चार व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को शुरू करने में अग्रणी होने का अनूठा गौरव प्राप्त है, अर्थात् बीए (ऑनर्स) हिंदी पत्रकारिता और जनसंचार जो 1994-95 में शुरू किया गया था, बीए (ऑनर्स) सोशल वर्क और बीए (ऑनर्स) बिजनेस इकोनॉमिक्स जो 1995-96 में शुरू किए गए थे और बीए (ऑनर्स) एप्लाइड साइकोलॉजी जो 2007-08 में शुरू किया गया था। कॉलेज को बीए (प्रोग्राम) के छात्रों के लिए कार्यात्मक हिंदी (एफएच) जैसे व्यावसायिक पाठ्यक्रम के अलावा मानव संसाधन प्रबंधन (एचआरएम) और कार्यालय प्रबंधन और सचिवीय प्रैक्टिस (ओएमएसपी) जैसे कुछ वाणिज्य आधारित पाठ्यक्रम प्रदान करने का गौरव प्राप्त है।

चैट जीपीटी के चलते हमारी मौलिकता, संस्कृति और इतिहास पर संकट के बादल छाए :- प्रो. कुमुद शर्मा

नई दिल्ली : डॉ. भीमराव अम्बेडकर महाविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा 26 सितंबर को हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन किया गया। जिसका विषय "कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और हिंदी" था। समारोह का आयोजन महाविद्यालय के सभागार में प्रातः 11:00 बजे प्रारंभ हुआ। इस अवसर पर प्राचार्य प्रो. सदानंद प्रसाद, कार्यक्रम की संयोजिका प्रो. चित्रा रानी, अध्यक्ष प्रो. कुमुद शर्मा विभागाध्यक्ष (हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय), प्रमुख वक्ता प्रो. सुधा सिंह वरिष्ठ प्रोफेसर (हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय) समेत महाविद्यालय के सभी विभागों के आचार्यगण, सहयोगी आचार्य गण, सहायक आचार्य गण, तदर्थ सहायक आचार्यगण व अतिथि आचार्यगण समेत कॉलेज कर्मचारीवृंद उपस्थित रहे।

हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह के दौरान मंचासीन शिक्षक और अतिथिगण

कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन और सरस्वती वंदना के साथ हुई। प्रो. चित्रा रानी जी ने पौध देकर प्रो. सुधा सिंह को सम्मानित किया और प्रो. शशि रानी ने प्रो. कुमुद शर्मा को शॉल देकर सम्मानित किया। हिन्दी पत्रकारिता और जनसंचार माध्यम के प्राचार्य प्रो. बिजेंद्र कुमार जी ने शॉल देकर प्रो. सुधा सिंह का स्वागत किया। दिल्ली विश्वविद्यालय के परम्परा के अनुसार कुल गीत से कार्यक्रम की शुरुआत हुई।

कार्यक्रम की संयोजिका प्रो. चित्रा रानी ने स्वागत भाषण के साथ कार्यक्रम का आरंभ हुआ। उन्होंने महाविद्यालय में हिंदी विभाग तथा हिंदी पत्रकारिता और जनसंचार विभाग में छात्रों के योगदान तथा विभिन्न कार्यक्रम और प्रतियोगिताओं में उनकी भागीदारी की बात रखी।

प्रो. राम प्रकाश ने अपने वक्तव्य में चैटजीपीटी से जुड़ी एक घटना का जिक्र किया उन्होंने बताया कि 2022 में किस तरह उनके लिए यह बहुत नया था। मगर समय के साथ इसके उपयोग से सहूलियत और चिंता दोनों बढ़ी। एआई का उपयोग मानव के दैनिक जीवन को किस प्रकार से प्रभावित कर रहा है। उन्होंने बताया कि किस तरह फोन एक लाइब्रेरी है जो हम अपनी जेब में लेकर घूम रहे है। आज एआई न्यूज़ एंकर तथा एआई वकील जैसे बहुत से उदाहरण है। जिसके कारण आज बहुत से लोगों पर नौकरी जाने का संकट है। टेक्नोलॉजी का विकास समय के साथ होना चाहिए। उन्होंने कहा कि हिंदी का भविष्य अब तकनीकी युग में और भी उज्जवल हो सकता है, बशर्ते हम इसके लिए नई तकनीकों का समुचित उपयोग करें।

प्रमुख वक्ता प्रो. सुधा सिंह सभी को धन्यवाद करते हुए अपने वक्तव्य का शुरुआत किया। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय के विविधता का जिक्र किया। जॉर्ज ऑरवेल के एक पुस्तक के बारे में बताया। तकनीक किस प्रकार से लोगों के सोचने के तरीके को प्रभावित कर रहा है। आज तकनीक इतनी विकसित हो गई है कि मानव पूरी तरह इसपर निर्भर है।

शेष पृष्ठ संख्या 2 पर>

एनएसएस स्थापना दिवस समारोह का आयोजन

नई दिल्ली : कॉलेज सभागार में एनएसएस स्थापना दिवस के अवसर पर छात्रों और शिक्षकों की उत्साहजनक और सक्रिय भागीदारी देखने को मिली। कार्यक्रम मे कॉलेज प्राचार्य प्रो. सदानंद प्रसाद और डॉ. रवींद्र सिंह सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित हुए।

कार्यक्रम की आधिकारिक शुरुआत औपचारिक दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुई, जिसके बाद सरस्वती वंदना की भावपूर्ण प्रस्तुति हुई।

कार्यक्रम में नए विद्यार्थियों को संगठन से परिचित कराया गया और उन्हें एनएसएस पाठ्यक्रम का अवलोकन कराया गया। एनएसएस इकाई के प्रमुख ने अपनी-अपनी टीमों के उद्देश्यों और मिशन को प्रस्तुत किया जिसमें एनएसएस के समग्र लक्ष्यों पर प्रकाश डाला गया, जिसमें सामुदायिक सेवा, नेतृत्व और समग्र विकास के महत्व पर जोर दिया गया।

प्राचार्य का स्वागत करते डॉ. रवींद्र सिंह

डॉ. रवींद्र सिंह

सांस्कृतिक कार्यक्रमों की जीवंत प्रस्तुति ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। पारंपरिक लद्दाखी लोक नृत्य, बॉलीवुड डांस और भांगड़ा प्रदर्शन ने मंच को जीवंत कर दिया। इसके अतिरिक्त, कविता पाठ और मधुर गीत प्रस्तुतियां भी हुई जिन्होंने कार्यक्रम में कलात्मक अभिव्यक्ति की।

कार्यक्रम बहुत सफल रहा, जिसका श्रेय एन.एस.एस. कार्यकर्ताओं के समर्पण और कड़ी मेहनत तथा शिक्षकों के मार्गदर्शन को जाता है।

एनएसएस स्थापना दिवस पर न केवल सेवा की भावना का जश्न मनाया गया, बल्कि छात्रों की प्रतिभा और एकता का भी प्रदर्शन किया गया।

विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के उपलक्ष्य पर कार्यशाला का आयोजन:- सोशल वर्क विभाग

नई दिल्ली : डॉ. भीमराव अंबेडकर कॉलेज की काउंसलिंग समिति ने विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर एक कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला में मनोवैज्ञानिक सुदीप कटेवरापू सहित प्राचार्य प्रो. सदानंद प्रसाद और काउंसलिंग समिति संयोजक प्रो. अनीता श्रीवास्तव काउंसलिंग समिति अध्यक्ष हर्षिता पुरोहित उपाध्यक्ष नेहा मंडल भी उपस्थित थे। प्रो. अनीता श्रीवास्तव ने बताया कि इस कार्यशाला का उद्देश्य मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाना और मानसिक रूप से स्वस्थ वातावरण को प्रोत्साहित करना था।

मंचासीन अतिथिगण और कार्यक्रम प्रतिभागी का अभिभाषण

वी अवेक यू मेंटल हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन के संस्थापक और मुख्य प्रबंध निदेशक सुदीप कटेवरापू ने मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के बीच अंतर पर प्रकाश डाला। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान देना कितना महत्वपूर्ण है। उन्होंने मनोवैज्ञानिकों और मनोचिकित्सकों के बीच के अंतर को भी स्पष्ट किया, यह बताते हुए कि जब समस्याएं नियंत्रण में हों तो मनोवैज्ञानिक से संपर्क किया जाता है, और जब समस्याएं जटिल हो जाती हैं, तब मनोचिकित्सक की आवश्यकता होती है।

कार्यशाला की मुख्य थीम 'यह समय है कार्यस्थल पर मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता देने का' पर आधारित थी। यह आयोजन विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के उपलक्ष्य पर हुआ। डॉ. कटेवरापु ने चर्चा की कि कैसे विषाक्त कार्य वातावरण कर्मचारियों के मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। उन्होंने बताया कि 88% भारतीय इस बात से अनभिज्ञ हैं कि सकारात्मक और विषाक्त कार्य संस्कृति में क्या अंतर है। उन्होंने अनेक संगठन के उदाहरण दिए, जहाँ साझा लंच ब्रेक जैसी गतिविधियों के माध्यम से सकारात्मक वातावरण का निर्माण किया जाता है।

डॉ. कटेवरापु ने यह भी बताया कि इस कार्यशाला का विषय "सकारात्मक शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए जीवनशैली में परिवर्तन और उसकी वकालत" था। उन्होंने बताया कि कैसे हमारे जीवन में छोटे-छोटे बदलाव, जैसे कि सही श्वास तकनीक, रात को ब्रश करना, और नियमित रूप से शरीर की डिटॉक्सिफिकेशन, मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार ला सकते हैं।

डॉ. कटेवरापु ने कई इंटरएक्टिव गतिविधियों का भी संचालन किया, जिनमें श्वास अभ्यास और माइंडफुलनेस तकनीक शामिल थीं। उन्होंने प्रतिभागियों को अपनी मानसिक स्थिति पर ध्यान केंद्रित करने और तनाव के प्रभावों को महसूस करने के लिए प्रोत्साहित किया।

कार्यशाला में उन्होंने मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता फैलाने वाले मशहूर हस्तियों का भी उल्लेख किया, जिनमें दीपिका पादुकोण, डायना, प्रिंसेस ऑफ वेल्स, और जेसी जे शामिल थे। इन हस्तियों के व्यक्तिगत संघर्षों को साझा करने से मानसिक स्वास्थ्य पर बनी कलंक को तोड़ने में मदद मिलती है।

पुस्तक समीक्षा

लेखक राजेन्द्र यादव

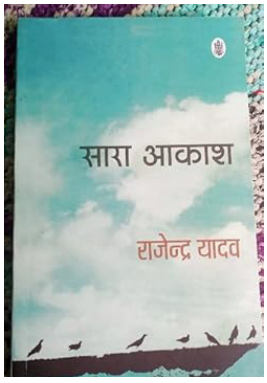

पुस्तक :- सारा आकाश

सारा आकाश पुस्तक के लेखक मशहूर लेखक राजेन्द्र यादव है। यह पुस्तक 80 के दशक की पारिवारिक समस्याओं के बारे में बताती है। सारा आकाश को पढ़ते वक्त आप इससे दूर नहीं हो सकते है। क्योंकि इसकी कहानी ,पात्रों के संवाद और संवादों से उपजे काल्पनिक चित्रण आपको अस्सी के दशक के भारतीय ग्रामीण समाज में लेकर चले जाता हैं। जहां अध्ययनरत नवयुवक की शादी कर दी जाती है। युवक के अंदर पुरुषत्व हावी है। उसे अपनी पत्नी से उम्मीद है कि बातचीत की पहल वही करेगी। लेकिन उसके ऐसा नहीं करने से पुरुषत्व को ठेस पहुंचती है। घरों के अंदर के सास जेठानी आदि के तिरस्कारों को सहते हुए नववधू घर के कामों में उनका हाथ बटाती है। समय काल परिस्थिति में परिवर्तन होता है। नवयुवक का पुरुषत्व क्षीण होता है। दोनों के संबंध प्रगाढ़ होते हैं। पति पत्नी के सम्बंध अच्छे होने के बाद उपजे पारिवारिक कलह का जो वर्णन है। वह पाठक के मन मस्तिष्क में रोमांच पैदा कर देता है।

राजेंद्र यादव ने अपनी इस कृति के माध्यम से उस समाज के भाव को सबके सामने प्रस्तुत करने की कोशिश की है जो कि अशिक्षा और रूढ़िवादी मानसिकता दोनों का ही दंश झेल रहा है। उसके अंदर अभी भी महिलाओं को चूल्हा चौकी से इतर देखने की क्षमता विकसित नहीं हुई है। पुरुष अभी भी स्त्री को हीनता से ही देखता है। इन्हीं विषयों पर राजेंद्र यादव द्वारा रचित सारा आकाश समाज के अंदर विमर्श पैदा करने का काम करती है। सारा आकाश एक महत्वपूर्ण कृति है जो राजेन्द्र यादव की गहरी सामाजिक दृष्टि को उजागर करती है। यह पुस्तक न केवल 80 के दशक की पारिवारिक समस्याओं को उजागर करती है, बल्कि उस समय के भारतीय समाज की जटिलताओं को भी बयां करती है। यादव ने न केवल पुरुषत्व की अवधारणा को चुनौती दी है, बल्कि पारिवारिक संबंधों की गहराई और संघर्ष को भी खूबसूरती से चित्रित किया है।

पृष्ठ संख्या 1 का शेष>

समय के साथ बुद्धी और सोचने की क्षमता कम होते जा रही है। आज किस प्रकार से सर्विलांस किया जा रहा जो निजता और गोपनीयता को ख़त्म कर दिया। इसके साथ इजरायल के द्वारा हिज्बुल्लाह पर पेजर अटैक का उदाहरण देते हुए बताया कि किस प्रकार टेक्नोलॉजी आज एक हथियार के रूप में इस्तेमाल हो रही है। आने वाला समय बुद्धि और विवेक को बचाने का युद्ध है। हम चैटजीपीटी का उपयोग करे या ना करे मगर चैटजीपीटी आप का उपयोग कर रहा है।

प्रो. कुमुद शर्मा विभागाध्यक्ष (हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय) अपनी बात की शुरुआत युवल नोआ हरारी के लिखो में किस प्रकार टेक्नोलॉजी का समय के साथ प्रभाव बढ़ता जा रहा बताया है। आज गूगल मैप का उपयोग यातायात के लिए अनुकरणीय है। प्रयागराज में होने वाले महाकुंभ में किस तरह-तरह से एआई का इस्तेमाल किया जा रहा है। भारत में हिंदी भाषा का सबसे अधिक उपयोग है और सोशल मीडिया का सबसे बड़ा हिंदी बाजार है। आज सवाल है कि एआई और मानव चेतना में कौन बड़ा है। चैटजीपीटी से तीन शब्दों बारिश, सावन, कोयल, से कविता लिखने के लिए बोला तो उसके जवाब ने मुझे बहुत संतुष्ट हुई। मगर चैटजीपीटी के कारण हमारे मौलिकता, संस्कृत, इतिहास पर संकट को लेकर चिंता हुआ।

प्राध्यापक हिंदी और जनसंचार प्रो. बिजेंद्र कुमार ने टेक्नोलॉजी किस तरह से जनसंचार माध्यम और भाषा को बदल है। यह आज सभी देख रहें है। भूमंडलीकरण के बाद किस तरह टेक्नोलॉजी में विकास हुआ है। आज के युवा जो भाषा का उपयोग कर रहे वह हिंदी और इंग्लिश भाषा का एक खिचड़ी है। भाषा की शुद्धता और तकनीक का उपयोग दोनों बहुत महत्वपूर्ण है।

भूगोल अध्ययन विभाग के विद्यार्थियों ने किया राजस्थान का दौरा

नई दिल्ली : डॉ भीम राव अम्बेडकर महाविद्यालय के भूगोल अध्ययन विभाग ने अपने अध्ययनरत विद्यार्थियों को राजस्थान का दौरा कराया। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय समाज, क्षेत्रों और रहन-सहन के प्रति जागरूक करना था। इस यात्रा में विद्यार्थियों को राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत से परिचित कराया गया। यह पांच दिवसीय दौरा 27 सितंबर से लेकर 2 अक्टूबर तक का था।

पहले दिन सभी ने उदयपुर में पिछोला झील में नौका विहार का आनंद उठाया। दूसरे दिन विद्यार्थियों ने उदयपुर के निकट ही एक गांव में वहां की स्वास्थ्य संबंधी और भोज्य पदार्थों आदि पर सर्वेक्षण किया। सभी ने तीसरे दिन चित्तौड़गढ़ और चौथे दिन कुंभलगढ़ किले का दौरा किया। वहां से विद्यार्थियों ने अपने सर्वेक्षण कार्य के लिए जानकारियां प्राप्त की।

विद्यार्थी और शिक्षक गण का ग्रुप फोटो

इस शैक्षणिक यात्रा के दौरान सभी शिक्षक और विद्यार्थी तीन सितारा होटल ओएसिस में ठहरे। शैक्षणिक यात्रा में भूगोल अध्ययन विभाग के प्रो. एस. एस. कादियान, प्रो. तूलिका सनाढ्य, प्रो. रियाजउद्दीन खान, डॉ. वारुणी पाठक, डॉ. अंजली भाटी ने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया। इस यात्रा में प्रथम, द्वितीय और तृतीय वर्ष के विद्यार्थी शामिल थे।

बाजारवाद ने हिंदी को वैश्विक मंच प्रदान किया है: प्रो द्विवेदी

नई दिल्ली : डॉ. बी. आर. अम्बेडकर कॉलेज के हिंदी अध्ययन विभाग के प्रो. रामप्रकाश द्विवेदी से ब्राक मीडिया के संवाददाता करूणा नयन ने वर्तमान समय में हिंदी के वैश्विक और भारतीय परिदृश्य पर खास बातचीत की।

प्रो. रामप्रकाश द्विवेदी का साक्षात्कार लेते हुए ब्राक मीडिया संवाददाता

Q. वर्तमान समय में वैश्विक परिदृश्य में हिंदी को कैसे देखते हैं?

उत्तर:- देखिए, आज का दौर बाजारीकरण का है। इसमें हिंदी और खास कर भारत को बहुत बड़े बाजार के रूप में देखा जा रहा है। इसलिए हिंदी ने साहित्य के नजरिए को छोड़कर सांस्कृतिक नजरिए को अपना लिया है। इससे हिंदी की सीमा का फैलाव हो रहा है और हिंदी वैश्विक फलक अपनी खास जगह बनाती जा रही है। वर्तमान समय में आर्थिक रुझान के कारण ही हिंदी अपना विस्तार कर पा रही है। पहले हिंदी के लोग ज्ञानार्जन के लिए साहित्य में रुचि रखते थे। उनको आर्थिक लाभ की इच्छा नहीं थी।

Q. जापान में आपका अध्यापन का अनुभव कैसा रहा ? वहां हिन्दी के प्रति लोगों का रुझान आपको कैसा लगा?

उत्तर:- प्राचीन काल में जापान के लोगों को केवल तीन देशों के बारे में पता था। पहला उनका देश जापान दूसरा चीन और चीन से कुछ दूरी पर स्थित भारत। इसलिए उनका भारत के प्रति रुझान रहा है। फिर बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार के कारण उन्होंने हिंदी को समझा। जापान में हिंदी राधाविनोद पाल, सुभाषचंद्र बोस और रास बिहारी बोस के चलते ज्यादा प्रचलित हुआ। उन्होंने आजादी आंदोलन के समय वहां संपर्क स्थापित किया। वहीं द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जब भारतीय सेना जापानी सेना के संपर्क में आई और उनकी रक्षा की तो उनका झुकाव भारत के प्रति हो गया। परंतु वास्तविक कारण बाजारवाद है। क्योंकि जापान का भारत के साथ व्यापारिक संबंध अच्छा है। वहां हिन्दी के प्रति लोगों की रुचि है। दूसरा कारण चीन के वैश्विक स्तर पर बढ़ते प्रभाव के कारण दुनिया भारत को अपने निवेश के तौर पर देख रही है और जापान चीन का पड़ोसी है। चीन का विस्तारवाद विश्व की समस्या है। इससे जापान और भारत दोनों ही देश अपने को प्रभावित महसूस करते हैं। ऐसे में चीन के प्रभाव को रोकने के लिए भी हिंदी की वहां शिक्षा प्रदान की जाती है। परंतु ऐसा नहीं है कि वहां सब लोग हिंदी ही बोलते हैं। हिन्दी को केवल व्यापार और बाजार के लाभ के लिए ज्यादा तवज्जो दी जाती है।

Q. हिंदी पर आरोप लगाते रहता है कि इसका विकास अन्य बोलियों और भाषाओं के दमन के कारण हुआ है इसपर आपके क्या विचार हैं?

उत्तर:- मैं इससे सहमत नहीं हूं। राष्ट्र निर्माण के लिए एक भाषा का होना जरूरी है। इस तर्क से कुछ लोग असहमत हो सकते हैं। क्योंकि राष्ट्र निर्माण में कुछ आहुतियां भी दीं जाती हैं। हालांकि आहूति शब्द उचित नहीं है। लेकिन यह कह सकते हैं कि यह राष्ट्र निर्माण के लिए आवश्यकता होती है। क्योंकि आजादी के बाद देश को एक सूत्र में पिरोने के लिए हिंदी ही एकमात्र भाषा थी। आप कल्पना कीजिए इस देश में आजादी के बाद तक पांच सौ से ऊपर रियासतें थीं। सबकी अपनी अगल भाषा और बोली थी। अब सोचिए अगर हिंदी केंद्र में नहीं आती तो देश में पांच सौ से ज्यादा भाषाएं होती और आने जाने पर वीजा लगता है। ऐसे में हिंदी ने किसी का नुकसान तो नहीं किया। हां संघर्षों पर विराम लगाते हुए एक शांति स्थापित जरूर किया है।

Q. भारत में हिंदीभाषी लोग ही हिंदी को हीनता के भाव से देखते हैं? इस विषय पर आपकी क्या राय है?

उत्तर:- इस हीन भावना का बीजारोपण अंग्रेजों ने फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना के साथ ही कर दी थी। उन्होंने अपने औपनिवेशिक लाभ के लिए भारतीयों को अंग्रेजी भाषा के प्रति मोड़ा। इसमें हिंदी के लोगों ने भी यदा कदा अपना योगदान दिया। लेकिन हमें हिंदी और अंग्रेजी के बीच द्वंद पैदा नहीं करनी चाहिए। जो काम भारत में हिंदी करती है। वैश्विक स्तर पर वही काम अंग्रेजी करती है। अगर आज किसी अन्य भाषा की उपन्यास पढ़ने का मुझे मन करता है तो मैं तुरंत गूगल पर उसका अंग्रेजी अनुवाद ढूंढ लेता हूं। किसी के लिए सभी भाषाओं का ज्ञान होना असंभव है। परंतु अंग्रेजी हमारे लिए यह कार्य सुगम कर देता है।

ओणम महोत्सव में दिखे मलयाली संस्कृति के नजारे

नई दिल्ली : डॉ भीम राव अम्बेडकर कॉलेज में मलयाली विद्यार्थी संगठन इदम ने कॉलेज प्रांगण में ओणम त्यौहार के ऊपर सात अक्टूबर को सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया। ओणम हिंदू सांस्कृतिक त्यौहार है। जोकि फसलों के वार्षिक कटाई के बाद मनाया जाता है।

ओणम त्योहार मनाते हुए विद्यार्थी

कार्यक्रम का शुभारंभ दीपार्जन ,सरस्वती वंदना और पारंपरिक नृत्य तिरुवातिरा के साथ हुआ । मलयाली विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक गायन वादन और नृत्य प्रस्तुति से दर्शकों को लुभाया। इस दौरान छात्राएं पारंपरिक परिधान कसवा मुंडू साड़ी और छात्र लूंगी कुर्ता पहने नजर आए। कार्यक्रम में रस्साकशी और स्पून रेस आदि खेलों का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतिभागियों को मलयाली मिठाई पयसम भी दी गई। कार्यक्रम आयोजन का मुख्य उद्देश्य कॉलेज में अध्ययनरत अन्य विद्यार्थियों को मलयाली संस्कृति और परम्परा की विविधताओं से रूबरू कराना था। इन कार्यक्रमों से आपसी प्रेम और सौहार्द में भी वृद्धि होती है।

बीएसडब्लू विभाग के विद्यार्थियों ने राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों का किया सर्वेक्षण

नई दिल्ली : डॉ भीम राव अम्बेडकर महाविद्यालय के समाज कार्य अध्ययन विभाग ने अपने विद्यार्थियों के अंदर सामाजिक अभिरुचि को पैदा करने के लिए राजस्थान में शैक्षणिक यात्रा कराई। इसके अंतर्गत विद्यार्थियों को ग्रामीण शिविर में प्रवास कराया गया। यह शैक्षणिक यात्रा तीस सितंबर से शुरू होकर चार अक्टूबर तक चली।

इस यात्रा में विद्यार्थियों को राजस्थान के ग्रामीण परिवेश में रोजमर्रा की जिंदगी में होने वाली कठिनाइयों से अवगत कराया गया।

इस यात्रा के दौरान विद्यार्थियों ने चार दिनों तक अलग-अलग गतिविधियां की। इसमें पहले दिन विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते हुए भोपाखेड़ा गांव का दौरा कराया गया। यहां सभी ने ग्रामीणों के साथ गीत-संगीत आदि विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों में हिस्सा लिया तथा माहौल का आनंद भी उठाया। दूसरे दिन चार भागों में विभक्त विद्यार्थियों की टोली ने रायला, बेरीपुरा, रानि डुंगला और नागिल्या गांव का सर्वेक्षण किया। वहां की समस्याओं को जाना। इसके साथ ही फतेहपुर झरना भी देखा। तीसरे दिन चारों टोली के विद्यार्थियों को दो टोली में शामिल किया गया। उन्होंने वृद्ध पुरुषों और महिलाओं की समस्याओं को जाना। दौरे के आखिरी दिन विद्यार्थियों ने अपने सर्वेक्षण का प्रस्तुतीकरण किया।

सर्वेक्षण के बाद विद्यार्थियों और शिक्षकों का ग्रुप फोटो

ग्रामीणों की समस्याओं पर सामूहिक चर्चा हुई। इसके साथ ही उदयपुर पैलेस भी ले जाया गया। यह शैक्षणिक यात्रा समाज कार्य अध्ययन विभाग और सीएएसए एनजीओ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित की गई थी। इस यात्रा में विद्यार्थियों को मार्गदर्शित करने के लिए समाज कार्य अध्ययन विभाग की समन्वयक प्रो. तुष्टि भारद्वाज , डॉ. दीपशिखा चौधरी, प्रो. ऋचा चौधरी और प्रो. अतुल प्रताप सिहं उपस्थित रहे।

विविध

नई दिल्ली :जीवन में नए मुकाम हासिल करने के लिए हर कोई संघर्षशील है। कभी कभी सोचता हूं अपनों से दूर, एक अंजान शहर में अंजान लोगों के बीच कुछ सीमित से संसाधनों में जीवन जीने और तथाकथित इस संघर्ष का आखिर औचित्य क्या है?

कोई रोजगार के खातिर, कोई शिक्षा के खातिर, अपनों से दूर, कोई सपनों के खातिर दरदर भटक रहा है। इसके केंद्र में वह पूंजी है, जिसने सभी को भ्रमित कर रखा है। जीवन में जितना भी संघर्ष है, वह एक लालसा की पूर्ति के लिए किया जा रहा है। हमने समृद्धि का पैमाना तय कर रखा है। इसी के लिए हम सभी अपने माता पिता के सानिध्य से कोसों दूर इस अजान शहर में अपनी बाट जोह रहे हैं। हम उस शहर में अपने सपने पूरे करने की कोशिश में लगें हैं जिसने कितनों के सपनों को साकार किया। कितनों को उनके मुकाम तक पहुंचाया। उसी लक्ष्य को पाने में हम संघर्षरत हैं। यह संघर्ष केवल हमारा नहीं है। हमारे साथ परिवारजन भी इसमें शामिल होते हैं। इसलिए हमारी जिम्मेदारी बढ़ जाती है कि हम कुछ ऐसा करें जिससे उनको हमारे ऊपर फक्र हो। इस शहर से बहुत उम्मीदें हैं।

सामुदायिक विकास के भारतीय मॉडल पर संगोष्ठी का हुआ आयोजन

नई दिल्ली : दिनांक 15 अक्टूबर 2024 को डॉ. भीमराव अंबेडकर कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय और के.के.एम. कॉलेज, पाकुड़ के संयुक्त तत्वावधान में 'भारतीय मॉडल ऑफ़ कम्युनिटी डेवेलपमेंट' पर एक राष्ट्रीय परामर्श कार्यक्रम का आयोजन डॉ. भीमराव अंबेडकर कॉलेज के प्रागण में हुआ। इस कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन और दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलगीत के गायन के साथ माँ सरस्वती की वंदना से हुई। इसके पश्चात डॉ. भीमराव अंबेडकर कॉलेज के प्राचार्य ने सभी को संबोधित किया और कार्यक्रम के संयोजक प्रो. बिष्णु मोहन दाश ने कार्यक्रम की रूपरेखा और उद्देश्य से सभी को अवगत कराया। कार्यक्रम के सह-अध्यक्ष प्रो. युगल झा ने भी सभा को संबोधित किया। दिल्ली विश्वविद्यालय की अंतर्राष्ट्रीय संबंध समिति की अध्यक्ष, प्रो. नीरा अग्निमित्रा ने सभा को संबोधित किया, और कॉलेजों के डीन प्रो. बलराम पाणि ने इस अवसर पर अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम को गरिमा प्रदान की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भारतीय शिक्षा मंडल के राष्ट्रीय संगठन सचिव श्री शंकरानंद बी.आर. जी थे। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के पूर्व कुलपति, प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने की। इस सत्र का संचालन प्रो. दीपाली जैन ने किया, जबकि कार्यक्रम के सह-संयोजक कुमार सत्यम् ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम ने सामुदायिक विकास के भारतीय मॉडल पर चर्चा के लिए एक मंच प्रदान किया, जहां विद्वानों, विशेषज्ञों और छात्रों ने मिलकर सामुदायिक विकास के विभिन्न पहलुओं पर विचार-विमर्श किया।

उद्बोधन के दौरान डीयूटीए अध्यक्ष, प्रो. ए. के. भागी

दूसरा सत्र एक वैज्ञानिक सत्र था जिसमें कई प्रतिष्ठित वक्ताओं ने भाग लिया। प्रमुख वक्ताओं में डॉ. प्रमोद कुमार (राजनीति विज्ञान विभाग, दयाल सिंह कॉलेज), प्रो. आर. आर. पाटिल (जामिया मिलिया इस्लामिया), प्रो. जगदीश जाधव (केंद्रीय विश्वविद्यालय, राजस्थान), प्रो. नवीन कुमार (मनोविज्ञान विभाग, भीम राव अंबेडकर कॉलेज), और प्रो. अरविंद कुमार मिश्रा (जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय) शामिल थे। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. पामेला सिंगला, समाज कार्य विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय ने की, जबकि सह-अध्यक्षता प्रो. उषविंदर कौर पॉपली, समाज कार्य विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया ने की। सत्र के अंत में कार्यक्रम के सह-संयोजक डॉ. किसलय कुमार सिंह ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया। इस सत्र का संचालन प्रो. तुष्टि भारद्वाज ने किया।

अंतिम सत्र समापन सत्र था, जिसकी शुरुआत अतिथियों को शॉल और फूलों के पौधे भेंट कर की गई। वरिष्ठ पत्रकार श्री सिद्धेश्वर शुक्ल ने सभा को संबोधित किया। डीयूटीए अध्यक्ष, प्रो. ए. के. भागी की गरीमामयी उपस्थिति रही। इस अवसर पर उन्होंने अपनी बात रखी रखते हुए सामुदायिक कार्य के भारतीय मॉडल को और संवर्धित करने की बात की। इस कार्यक्रम के अतिथि भारत भक्ति फाउंडेशन के संस्थापक निदेशक और अंतरराष्ट्रीय संगठन सचिव श्री बृजेश कुंतल जी थे।

झलकियां

डॉ. भीमराव अंबेडकर कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय और के.के.एम. कॉलेज, पाकुड़ के संयुक्त तत्वावधान में 'भारतीय मॉडल ऑफ़ कम्युनिटी डेवेलपमेंट' पर एक राष्ट्रीय परामर्श कार्यक्रम का आयोजन डॉ. भीमराव अंबेडकर कॉलेज के प्रागण में हुआ।

सिनेमा जगत

लापता लेडिज ऑस्कर के लिए हुई नामांकित

नई दिल्ली : किरण राव की फिल्म "लापता लेडीज" को 97वें अकादमी पुरस्कार के बेस्ट इंटरनेशनल फीचर फिल्म श्रेणी के लिए भारत की आधिकारिक प्रविष्टि के रूप में चुना गया है। नेटफ्लिक्स पर प्रीमियर हुई यह फिल्म एक व्यंग्यात्मक नाटक है जो पितृसत्ता, सामाजिक मानदंडों और पहचान के विषयों की पड़ताल करती है।

लापता लेडीज़ इसी साल 1 मार्च 2024 को सिनेमाघरों में रिलीज़ हुई थी। इससे पहले फिल्म की 48वें टोरंटो इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में 8 सितंबर को स्क्रीनिंग की गई थी. स्क्रीनिंग के दौरान फिल्म की खूब तारीफ हुई थी। रिलीज़ के बाद फिल्म को समीक्षकों की ओर से खूब सराहना हासिल हुई

लापता लेडीज को ऑस्कर में भारत की ऑफिशियल एंट्री किरण राव की निर्देशित फिल्म 'लापता यह फिल्म एक दिलचस्प कहानी पर आधारित है, जो भारतीय समाज में महिलाओं के जीवन और उनके संघर्षों को उजागर करती है। फिल्म की कहानी दो लड़कियों के जीवन के आसपास घूमती है, जो एक ही ट्रेन से ससुराल जाने निकलती हैं और फिर उनकी यात्रा के दौरान कई रोमांचक और भावनात्मक मोड़ आते हैं।

लापता लेडीज को ऑस्कर में भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुना जाना एक बड़ी उपलब्धि है। यह फिल्म भारतीय सिनेमा के लिए एक गौरव का क्षण है और उम्मीद है कि यह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी सराहना प्राप्त करेगी।

ऑस्कर में भारत की ऑफिशियल एंट्री पाने के बाद किरण राव ने कहा, 'यह मेरी पूरी टीम की बेइंतहा मेहनत का प्रमाण है, जिनके समर्पण और जुनून ने इस कहानी को जीवंत कर दिया। सिनेमा हमेशा दिलों को जोड़ने, सीमाओं को पार करने और सार्थक बातचीत को साकार करने का एक शक्तिशाली माध्यम रहा है। मुझे उम्मीद है कि यह फिल्म दुनियाभर के दर्शकों को पसंद आएगी। फिल्म के विजन में अटूट समर्थन और विश्वास के लिए मैं आमिर खान प्रोडक्शंस और जियो स्टूडियोज का तहे दिल से शुक्रिया अदा करती हूं। ऐसी प्रतिभाशाली टीम के साथ काम करना मेरे लिए सौभाग्य की बात है।'

शिक्षक सहयोगी : प्रो. बिजेन्द्र कुमार , प्रो. शशि रानी, डॉ. राकेश कुमार, डॉ. रंजीत कुमार, डॉ. सुभाष गौतम
डिज़ाइन परिकल्पना : योगेश , विरेंद्र नोगिया , नीरज कुमार
छात्र सहयोगी : *करुणा नयन चतुर्वेदी, सत्यम वर्मा, नरसिंघ, गोविंद यादव, सत्यम कुमार, रीतिका पटेल, सूरज, साकिब, अर्पित,राहुल, आलोक, सौरव, सक्षम, प्रेम, अभिषेक, आयुष, राम पाठक*

डिस्क्लेमर: ब्राक मीडिया के इस प्रायोगिक समाचार-पत्र में छपी सामग्री लेखक के अपने विचार है, इस सामग्री का संपादकीय टीम से कोई संबंध नहीं है।